सं. म्रो. वि. | यमुना | म्रम्बाला | 64-85 | 40725. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. (1) सिचय हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, चण्डीगढ, (2) कार्यकारी म्रियमना (म्रोप्रेशन) हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, कुरुक्षेत्र, के श्रमिक श्री बाब राम तथा उसके प्रवत्यकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रीचोगिक विवाद ग्रंधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रंधिमृचना सं. 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रंपेल, 1984 द्वारा उक्त ग्रंधिनियम की धारा 7 के ग्रंधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उससे सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री बाबू राम की सेवाग्रों का समाधान न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ।

सं. भ्रो.वि./पानी/86-85/40732.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. पानीपत फिनिसर्ज मार्फत मैं श्रार० के० बूलन मिल, नं० 1, पानीपत, के श्रमिक श्री प्रहलाद सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रब, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रीधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त ग्रीधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एंव पंचाट तीन मास मे वेने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त भामला है या उस से स्संगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री प्रहलाद सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 10 सितम्बर, 1985

सं. ग्रों. वि./एफ.डी./148-85/37153.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. भारत कार्बन एण्ड रिब्बन मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी लिं०, एन० ग्राई०टी०, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री मोती राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के क्षाज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, धौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों की प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिध्सूचना सं 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धार्य 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला नायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबन्धित मामला है :—

क्या श्री मोती राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./एफ.डो./190-85/37160.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. साज इन्टरनैशनल प्रा. लि०, ब्लाट नं. 46, 49, डो.एल.एफ. श्रौद्योगिक क्षेत्र, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री योगेश्वर झा तथा उसके प्रबन्धकों के मंध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्ठित्यम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये श्रिष्ठसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रिष्ठित्यम की धारा 7 के श्रधीन गिठित श्रिम नियायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त तथा उससे सुसंगत अथा श्रीक नीचे लिखा सामला न्यायितर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री योशिश जा की सेवायों का सनाया न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?